Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
March 2024 5(3), 2016–2019

STUDY OF THE EFFECT OF STRESS ON ACADEMIC ACHIEVEMENT OF STUDENTS STUDYING AT HIGHER SECONDARY LEVEL

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर तनाव के प्रभाव का अध्ययन

Ashok Sidana [1], Ravi Kumar Sen [2]

[1] Professor & Dean, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India
[2] Research Scholar, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India

Corresponding Author
Ravi Kumar Sen,
ravikumarsen2727@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i3.2024.6146

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: This research paper study art as in form of symbols and do analytical study the theory of Harvard Gardner 'artistic symbols' presented in child art and symbols used in different artist's paintings. In modern art there are many theories on art appreciation and Gardner theory of artistic symbol is one of them. Gardner developed his theory on the basis of American philosopher Nelson Goodman's theory of symbols. In 1973-1980 Gardner experiment about the stages of child brain development and study about children's creative expression and used symbols by them. Also study the symbols used by different artists in their paintings.

Hindi: प्रस्तुत शोध सारांश कला का प्रतीक रूप में अध्ययन करता है तथा हार्वड गार्डनर नामक विद्वान द्वारा प्रस्तुत बालको की कला में प्रयुक्त प्रतीक तथा विभिन्न कलाकारों द्वारा उनकी कलाकृतियो में प्रयुक्त प्रतीको के प्रयोग पर अध्ययन करता है। आधुनिक काल में कला समीक्षा की विभिन्न विचारधाराएँ मिलती है। इसी प्रकार संज्ञानात्मक आधार पर कला समीक्षा की विचारधाराओ में से एक है 'कला का प्रतीक रूप में अध्ययन'। गार्डनर ने अमेरिकी दार्शनिक नेल्सन गुडमैन की प्रतीको की विचारधारा के आधार पर अपना मत विकसित किया। 1973-1980 तक उन्होने बाल मस्तिष्क के विकास की स्थितियाँ, बच्चो की सृजनात्मक अभिव्यक्ति एंव उनमे प्रयुक्त कला प्रतीको का अध्ययन किया तथा साथ ही विभिन्न कलाकृतियो में निहित कलात्मक प्रतीको का अध्ययन करके अपनी विचारधारा प्रस्तुत की।

Keywords: Artistic Symbols, Art Appreciation, Creative Expression, Cognitive Base, कलात्मक प्रतीक, कला समीक्षा, सृजनात्मक अभिव्यक्ति सत्रांनात्मक आधार

1. प्रस्तावना

आजकल छात्रों पर माता-पिता, परिवार, साथियों और समाज का दबाव बढ़ रहा है कि वे एक अच्छी नौकरी और वेतन के साथ एक प्रतिष्ठित पद हासिल करें और इसके लिए उन्हें उत्कृष्ट उपलब्धि रिकॉर्ड बनाए रखने का निर्देश दिया जाता है। उत्कृष्ट शैक्षणिक उपलब्धि के बिना, छात्रों को अच्छी नौकरी, सामाजिक स्वीकृति और उच्च शिक्षा के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान में प्रवेश भी नहीं मिल पाएगा। इसलिए माता-पिता अपने बच्चों पर शैक्षणिक ग्रेड हासिल करने और उसमें असफल होने का दबाव बना रहे हैं, जिससे छात्रों में तनाव, अवसाद और चिंता पैदा होती है। शैक्षणिक उपलब्धि को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि एक छात्र स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय में, कक्षा में, प्रयोगशाला में, पुस्तकालय में या परियोजना कार्य में क्या करता है या क्या हासिल करता है। शैक्षणिक उपलब्धि को आमतौर पर परीक्षा या निरंतर मूल्यांकन द्वारा मापा जाता है, लेकिन कोई सामान्य

मनोवैज्ञानिक विकार नहीं है जो छात्रों पर बेहतर अंक प्राप्त करने के दबाव को काफी बढ़ा देता है। ये कारक सामूहिक रूप से उनके प्रदर्शन में बाधा डालते हैं जिससे शैक्षणिक उपलब्धि कम होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य तनाव और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का पता लगाना था।

1.1. शोध समस्या का औचित्य

शैक्षिक जगत में जब कोई अनुसंधान कार्य किया जाता है जो उस अनुसंधान की उपादेयता, महत्व, प्रकृति आदि का औचित्य सिद्ध करना इसलिए आवष्यक है कि इसके द्वारा यह सिद्ध कर सके कि इस अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगे? इसके अतिरिक्त समस्या की उपादेयता को सिद्ध करने में भी सहायक होता है। प्रस्तुत शोध समस्या का औचित्य निम्न प्रकार से है-

शैक्षिक दृष्टि से: शैक्षिक दृष्टि से इस शोध कार्य द्वारा विद्यार्थियों की तनाव स्तर को जाना जा सकेगा।

सामाजिक दृष्टि से: सामाजिक दृष्टि से भी इस शोध के माध्यम से विद्यार्थियों के तनाव स्तर के बारे में जाना जा सकेगा।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से: मनोवैज्ञानिक दृष्टि से शोध द्वारा तनाव स्तर का व्यक्तिगत स्तर पर सही मूल्यांकन किया जा सकेगा एवं समय-समय पर उनको सही निर्देषन दिया जा सकेगा।

1.2. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

दास, आदित्य कुमार व सुब्रमणियम, पी. के. (2022) द्वारा पांडिचेरी विश्वविद्यालय की योगा और गैर योगा पेशेवर महिला विद्यार्थियों के मध्य समायोजन समस्याओं, दुश्चिन्ता एवं कुण्ठा का अध्ययन विषय पर शोध किया। मलिक, हफ्सा (2020) द्वारा हैदराबाद शहर में नवोदय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों बीच में चिन्ता के प्रतिमान विषय पर अध्ययन किया। जिशा, के. वी. (2017) द्वारा शैक्षिक चिन्ता के सम्बन्ध में लचीलापन विषय पर अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा पूर्व में तनाव से सम्बन्धित भारत एवं विदेशों में हुए शोध अध्ययनों का अध्ययन करने के पश्चात् ज्ञात हुआ कि पूर्व में जो भी शोध कार्य हुए हैं, तनाव के साथ अन्य चरों को लेकर हुए हैं एवं तनाव को लेकर किये गये शोध अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा पूर्ण किये गये हैं। शोधकर्ता ने पाया कि सैद्धान्तिक आधार पर हम कुछ मान्यताऐं या पूर्व विचार धाराएं सुनिष्चित कर लेते है। परन्तु कई बार अध्ययन के उपरान्त इसमें भिन्नता दिखाई देती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन इस क्षेत्र में हुए समस्त शोध अध्ययनों से अलग तथा षिक्षा के क्षेत्र में आधारभूत योगदान प्रदान करने वाला होगा। उपयुक्त अनुसंधान अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि तनाव के साथ कार्य बहुत कम है।

1.3. समस्या कथन

प्रस्तुत शोध समस्या निम्नलिखित शीर्षक के अन्तर्गत लिखी गई है।

''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर तनाव के प्रभाव का अध्ययन''

1.4. शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में तनाव, उच्च माध्यमिक विद्यालय, राजकीय विद्यालय, निजी विद्यालय जैसे विशिष्ट शब्दों की व्याख्या आवश्यक है।

ण्ण् तनाव - तनाव और उसकी अभिव्यक्तियाँ, जैसे अवसाद और चिंता, हमेशा से विभिन्न व्यवसायों और व्यवसायों में लोगों के बीच एक आम समस्या के रूप में देखी गई हैं। पिछले कुछ दशकों में, पुस्तकों, शोध रिपोर्टों, लोकप्रिय लेखों और कार्यशालाओं की बढ़ती संख्या ने चिंता पैदा कर दी है, जिनका उद्देश्य लोगों को इस समस्या से निपटने का तरीका सिखाना है। साहू, पांडे और झा (2016) के अनुसार, "शैक्षणिक तनाव वह सब कुछ है जो किसी व्यक्ति की सामना करने की क्षमता पर अतिरिक्त दबाव डालता है"। अभिभावकों और शिक्षकों की अव्यावहारिक धारणाएँ और माँगें, खराब शैक्षणिक प्रदर्शन और खराब अध्ययन का कारण बनती हैं (लियू और लू, 2012)। अतः तनाव शरीर की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दशा है। यह उत्तेजना और असंतुलन उत्पन्न कर देता है एवं उसे परिस्थिति का सामना करने के लिए क्रियाशील बनाता है।

उच्च माध्यमिक विद्यालय- नई शिक्षा नीति 1986 के अनुच्छेद संख्या 1.13 के अनुसार कक्षा ग्याहरवीं एवं बाहरवीं स्कूली शिक्षा को उच्च माध्यमिक शिक्षा कहते हैं।

राजकीय विद्यालय - वे विद्यालय जिनमें प्रबंधन, अध्यापक, भवन, पाठ्यक्रम सभी की वित्त-व्यवस्था सरकार द्वारा की जाती है।

निजी विद्यालय - निजी स्वामित्व वाले विद्यालय जिनका प्रबंधन, अध्यापक, भवन आदि की वित्त-व्यवस्था प्रबंधक स्वयं करता है परन्तु मान्यता व पाठ्यक्रम सरकार द्वारा निर्धारित होते है।

शैक्षिक उपलब्धि - ''शैक्षिक उपलब्धि प्रयासों से प्राप्त परिणाम प्राप्त करने की एक कला है, छात्र के काम की गुणवत्ता और मात्रा।" (मेरियम वेबस्टर कॉलेजिएटशब्दकोश 2001)

1.5. अध्ययन के उद्देष्य:- प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निम्नलिखित उद्देष्य निर्धारित किये गये -

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों एवं उच्च षैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के तनाव स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के तनाव स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

1.6. अध्ययन की परिकल्पनाए

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएं की गई है -

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों एवं उच्च षैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के तनाव स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के तनाव स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है।

1.7. शोध विधि

प्रस्तावित शोध में शोधकत्र्ता ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

शोध में न्यादर्श: प्रस्तावित शोध में बूंदी के कुल 20 विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया गया। जिसमें भौगोलिक क्षेत्रफल के आधार पर विद्यालयों का चयन किया गया। बूंदी से दस राजकीय एवं दस निजी विद्यालयों के कुल बीस विद्यालयों के स्नातक स्तर के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के 840 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयनित किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण:-

शोधकत्र्ता द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु दत्त संकलन का कार्य स्वयं पर्यवेक्षक के निर्देशन में ड़ाॅ. अषोक सेवानी द्वारा मानकीकृत उपकरण द्वारा किया गया। षैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के परीक्षा परीणाम को लिया गया।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी -

शोधकत्र्ता ने वर्तमान शोध कार्य के लिए न्यादर्श से आँकड़े एकत्रित करेगा, इन आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए सामान्य सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग किया गया:-

1. मध्यमान
2. प्रमाणिक विचलन
3. सहसम्बन्ध

शोध का परीसीमन

किसी भी शोध कार्य की गहनता एवं सूक्ष्मता की दृष्टि से शोध कार्य की सीमा निर्धारण करना आवश्यक है ताकि 'शोधकर्ता विषय/उद्देश्यों से अन्यत्र न भटक जाए।

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न प्रकार सीमा निर्धारण किया गया हैं:-

समयाभाव के कारण वर्तमान शोध प्रबंध को निम्न परिसीमाएं दी गई है -

1) प्रस्तावित शोध प्रबन्ध बूंदी जिलें के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 840 विद्यार्थियों तक हीं सीमित हैं।
2) प्रस्तावित शोध प्रबन्ध बूंदी जिलें के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित हैं।

2. निष्कर्ष

1) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों एवं उच्च षैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के तनाव स्तर से सम्बन्धित आँकड़ों का विश्लेषण

- उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों एवं उच्च षैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के कुल तनाव स्तर एवं उसके आयामों यथा: कार्य निष्पादन सम्बन्धित एवं छवि निर्माण संबंधी के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया जबकि तनाव के पारिवारिक संबंधी, आर्थिक संबंधी एवं शैक्षिक संबंधी के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- परिकल्पना संख्या 1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों एवं उच्च षैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के तनाव स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। कुल तनाव स्तर एवं उसके आयामों यथा: एवं उसके आयामों यथा: कार्य निष्पादन सम्बन्धित एवं छवि निर्माण संबंधी के सन्दर्भ में अस्वीकृत की जाती है। जबकि पारिवारिक संबंधी, आर्थिक संबंधी एवं शैक्षिक संबंधी के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है।

2) उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के तनाव स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध के आँकड़ों का विश्लेषण

- बूंदी जिले के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं तनाव तथा उसके आयामों छवि निर्माण संबंधी व शैक्षिक संबंधी के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध और शैक्षिक उपलब्धि एवं तनाव के आयाम छवि निर्माण संबंधी व आर्थिक संबंधी के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जबकि शैक्षिक उपलब्धि एवं तनाव के आयाम परिवार संबंधी तनाव के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- परिकल्पना संख्या 2 जिसके अनुसार ''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के तनाव स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है।'' तनाव तथा उसके आयामों छवि निर्माण संबंधी व शैक्षिक संबंधी तनाव के सन्दर्भ में अस्वीकृत तथा तनाव तथा उसके आयामों छवि निर्माण संबंधी, पारिवारिक संबंधी तनाव व शैक्षिक संबंधी तनाव के सन्दर्भ में स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अहलूवालिया, आर. पी. (1968): शिक्षा मनोविज्ञान, कानपुर, मीनाक्षी प्रकाशन।
अन्वेषिका(2015,)अध्यापक शिक्षा की शोध पत्रिका, एन.सी.ई.टी, नई दिल्ली, मई-अगस्त, वा ॅल्यूम-10, नम्बर-2, पृ.स ं. 51
एलीस, आर. एस. (1985): एजूकेशन साइका ॅलोजी, न्यूयार्क, न्यूयार्क वेन नोस्टर्ड कम्पनी।बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (2004): रिसर्च इन एजूकेशन, न्यूयार्क, पियर्सन एजूकेशन प्रा. लि.।
भटनागर, सुरेश (2005): शिक्षण अधिगम व विकास का मनोविज्ञान, मेरठ, इन्टरनेशनल पब्लिकेशन।
जर्नल ऑफ़ कम्युनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च (2014): नीलकमल पब्लिकेशन्स प्रा. लि., जुलाई,, वोल्यूम 31, नं. 2
जर्नल ऑफ़ टीचर एजुकेशन(2015) : एन.सी.टी.ई. नई दिल्ली, दिसम्बर 2, वोल्यूम 10, न ं. 2
के. वी. जिशा (2017) शैक्षिक चिन्ता के सम्बन्ध में लचीलापन, पीएच. डी., केरल विश्वविद्यालय।